English

setuu अध्याय 10

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

अस्तित्व का रहस्य : कैसे एक औरत अधिकतम 60000 बच्चों को जन्म दे सकती है

जब बाबा मातंग ने यजमान चरिता के लिए अर्पण का विधि विधान पूरा किया , प्रसाद का समय आया | हनुमान जी ने चरिता से पूछा - “हे नादान, जिस श्रद्धा से तुमने अपने कर्मों का अर्पण किया , मैं प्रसन्न हूँ | बताओ , प्रसाद में क्या प्राप्त करने की इच्छा है?”

चरिता ने अन्दर ही अन्दर संतान की इच्छा प्रकट की | वह पिछले कुछ महीने से संतान पाने की कोशिश कर रही थी लेकिन सफलता नहीं मिल रही थी | यह इच्छा हनुमान जी के सामने प्रकट करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई | उसके होंठों पर अंततः जो शब्द आये , वे थे - “हे हनुमान जी , हम मातंग तो केवल परम ज्ञान की इच्छा रखते हैं | कृपा मुझे वह ज्ञान दीजिये जो मोक्ष की ओर ले जाता है |”

हनुमान जी मुस्कुराये | उन्हें उसकी अप्रकट इच्छा का आभास था | जब इच्छाओं का नाश होता है तभी कोई आत्मा मोक्ष के पथ पर बढती है | इसलिए हनुमान जी को उसे कुछ ऐसा बताने की सूझी जिससे या तो उसकी इच्छा का नाश हो जाए , अथवा वह इच्छा कुछ इस तरह पूरी हो जाए कि वह आगे और इच्छाओं को न जगाये | उन्होंने उर्वा , जो कि 20- 25 साल की उम्र का मातंग है , की ओर देखा जो सभा में शांति से बैठा हुआ था |

हनुमान जी ने अपने हाथ से उर्वा की ओर इशारा किया और मातंगो से पूछा - “हे मातंगो, आप सबको कैसे पता कि इस विश्व में उर्वा नाम का कोई मानव है जो इस समय आप सबके बीच बैठा है |”

जब हनुमान जी ने उर्वा के अस्तित्व को इस तरह चुनौती दी , तो उर्वा के मन में भय की तरंग दौड़ गई |

उर्मी , एक लड़की जो 20-25 साल की है , और जो उस पूजा में होतर की भूमिका निभा रही थी , खड़ी हुई | होतर का काम होता है पूजा में चर्चा चलाना जिससे कि हनुमान जी मातंगों को ब्रह्मज्ञान दे सकें | उसने उत्तर दिया - “हे हनुमान जी, मैं उर्वा को अपनी आँखों से देख सकती हूँ | मैं उसकी तरफ चलकर उसे छू सकती हूँ | मैं उसके साथ बोल सकती हूँ |मैं उसको सुन सकती हूँ | मैं उसके साथ कई प्रकार से आदान-प्रदान कर सकती हूँ | जिससे मुझे पता चलता है कि वह वहां पर वास्तव में उपस्थित है | जिससे हम सबको उसके अस्तित्व का भान है |”

जब उर्मी बोल रही थी तब हनुमान जी ने उसकी तरफ देखा तक नहीं | वे उर्वा की तरफ रहस्यमय तरीके से देख रहे थे | वे बोले - “... तो अगर मैं उसको वहां से गायब कर दूँ , तो उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा , हैं ना?”

“नहीं, प्रभु |” उर्मी तुरंत बोली - “मेरा अर्थ है, अगर वह वहां से गायब भी हो जाता है तो भी उसका अस्तित्व हमारी यादों में बना रहेगा | हम सबकी उसके बारे में बहुत सी यादे हैं | उसकी माता को याद रहेगा कि कैसे उन्होंने उसको 9 महीने अपने गर्भ में रखा, कैसे उन्होंने जीवन के उतार चढ़ावों में उसको बड़ा होते देखा | उसके पिता को उसके जन्म से लेकर अब तक के सभी क्षणों की स्मृति रहेगी | बाबा मातंग को याद रहेगा कि ...”

“अगर मैं आप सबके मन से उर्वा की सभी स्मृतियाँ मिटा दूँ , तो क्या उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा?” हनुमान जी ने पूछा, उर्वा को ऐसे घूरते हुए जैसे वे उसको वाष्प में बदलने वाले थे|

जब उर्मी हनुमान जी के प्रश्न पर विचार कर रही थी , उर्वा खड़ा हुआ | उसकी देह भय से कांप रही थी | उसने उस भय को अपनी आवाज में न लाने का प्रयत्न किया | अपने हाथ जोड़कर बोला - “हे प्रभु , मैं आपको पूर्णतः समर्पित हूँ | मेरा अस्तित्व आपके कारण है , और मैं ख़ुशी ख़ुशी आपके चरणों में न्योछावर हो जाऊँगा |”

उर्वा के इस कथन से बाबा मातंग के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान आ गई | वह इस बात पर गर्व कर रहे थे कि युवा होने के बावजूद उर्वा में सच्चे मातंग के गुण थे | उन्हें ये आभास नहीं था कि उर्वा की देह भय से कंपकपा रही थी और समर्पण के मधुर शब्द वह इस दूरस्थ आशा में बोल रहा था कि हनुमान जी का ‘क्रोध’ शांत हो जाएगा |

उन मधुर शब्दों का हनुमान जी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा | वे उर्वा की तरफ उसी तरह रहस्यपूर्णता से देखते रहे और अपने पूछे गए प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे |

उर्मी ने अपना सारा ज्ञान निचोड़ा और उत्तर दिया - “हे चिरंजीवी हनुमान , उर्वा मात्र हमारी स्मृति में ही उपस्थित नहीं है , उसने अपनी आत्मा का चिन्ह विश्व के कण कण पर छोड़ा है | वह रात को सितारों से बतलाता है ; अतः सितारों की स्मृति में भी वो है | वह पशु पक्षियों से बतियाता है , अतः उनकी स्मृति में भी वो है | वह चट्टानों पर कलाकृतियाँ बनाता है , वे कलाकृतियाँ इसके अस्तित्व का सबूत हैं | जब वह चलता है , रेत पर उसके पदचिन्ह छूटते हैं | बचपन से अब तक इसने जितने भी पदचिन्ह धरती पर छोड़े हैं , वे वर्तमान से भले ही मिट गए हों , भूतकाल में वे अभी भी हैं | इसने अब तक जितनी भी सांसे ली हैं, वे साँसे वायुदेव की स्मृति में चिन्हित हैं | इसकी देह ने अब तक जितना जल ग्रहण किया है और बाहर निकाला है , वह वरुणदेव की स्मृति में अंकित है | जब यह काम करता है तो इसका शरीर गर्म हो जाता है , और जब नहाता है तो ठंडा ; इस तरह इसकी देह से हुए अग्नि के आदान प्रदान के चिन्ह अग्निदेव की स्मृति में चिन्हित हैं | इतना ही नहीं , यह भविष्य का बाबा मातंग है | अतः वह सभी मातंगों की कल्पना में भी है , जिसके फलस्वरुप इसका अस्तित्व भविष्य में भी है |”

“अगर मैं उर्वा के हर आदान-प्रदान को मिटा दूँ -- भूत, वर्तमान भविष्य से ; विश्व के हर कण से -- उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, है न?” हनुमान जी ने टिपण्णी की | वे अब भी उर्वा की ओर देख रहे थे|

अब उर्मी के पास कोई उत्तर नहीं था | उसने एक क्षण के लिए बाबा मातंग की ओर देखा | जब वह हनुमान जी की ओर मुड़ी तब उसने देखा कि हनुमान जी एक मटका लिए हुए थे जिसमे दुग्ध जैसा कोई द्रव था | अब हनुमान जी उसकी ओर देख रहे थे | उन्होंने पूछा - “फिर से बोलो, तुमने अभी अभी क्या कहा?”

उर्मी हाथ जोड़कर बोली - “हे प्रभु , जो मटकी आपके हाथ में है, मैंने उसके बारे में प्रश्न पूछा | यह क्या है और इसके अन्दर यह कैसा द्रव है ? कृपा ज्ञान दें |”

हनुमान जी ने अपनी आँखे झपकाई और सिर हिलाया, जैसे कि वे किसी अजनबी स्थान पर अचानक उठे हों | उन्होंने पूछा - “मैं समझ नहीं पाया कि यहाँ क्या चल रहा है? तुम कौन हो और यह कौन सा स्थान है?”

उर्मी ने बाबा मातंग की ओर देखा | बाबा खड़े हुए और बोले - “हे प्रभु , हम आपके प्रिये मातंग हैं | आप हमारी धरा पर 41 वर्ष बाद आये हैं | यह चरण पूजा का प्रथम दिन है | प्रथम चरण के यजमान बसंत थे और अब दूसरा चरण चल रहा है जिसकी यजमान चरिता हैं | अर्पण की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है | अब प्रसाद का समय है | आपने चरिता से उसकी प्रसाद में कुछ पाने की इच्छा के बारे में पूछा है | उसने ब्रह्मज्ञान पाने की इच्छा जताई है | उसके बाद यह विचित्र मटकी आपके हाथों में प्रकट हुई है | ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इसमें दुग्ध जैसा कोई पदार्थ है | उर्मी इस पूजा की होतर है

इसलिए उसने इस मटकी के बारे में जानने की जिज्ञासा प्रकट की है | अगर यह चरिता के लिए प्रसाद है तो कृपा बताएं कि वह इसको कैसे रखे और किन नियमों का पालन करे ?"

"ओह ... हाँ ... हाँ ... हाँ ... यह पात्र और यह द्रव" हनुमान जी मुस्कुराये | उर्मी और बाबा मातंग ने राहत की सांस ली |

"यह श्वेत द्रव दिखने वाली चीज 'आकाश' है |" हनुमान जी ने बताया , "यह वही पदार्थ है जो विष्णुलोक में मुक्तिसागर में पाया जाता है | यह पात्र (मटकी) भी साधारण पात्र नहीं है | यह पात्र देवी लक्ष्मी द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला पात्र है | इस पात्र के अन्दर यह पदार्थ दुग्ध जैसा दिख रहा है लेकिन मैं अगर इस पदार्थ को व्यक्त होने दूं, तो एक मानव इसमें से निकलेगा | उस मानव का नाम उर्वा है | आप लोग उसे जानते हैं , है ना?"

[हिंदी ट्रांसलेशन टीम की टिपण्णी : अंग्रेजी के "स्पेस" शब्द का हिंदी में अर्थ "आकाश" होना चाहिए लेकिन व्यावहारिक भाषा में आकाश को बादलों आदि से जोड़ा जाता है | इस अध्याय में "आकाश" का अर्थ बहुत गूढ़ है | आकाश की जगह अगर आप इसे "अस्तित्व" पढ़े तो बेहतर रहेगा | लेकिन हमने "स्पेस" को "आकाश" में ही रूपांतरित किया है |]

"नहीं प्रभु|" उर्मी ने उत्तर दिया - "हम उर्वा नाम के किसी मानव को नहीं जानते |"

हनुमान जी अपने मुख पर चकित होने के भाव ले आये | सभी देवता जो हनुमान जी की इन लीलाओं को देख रहे थे , मुस्कुराये | हनुमान जी बोले - "उर्वा एक मातंग है भाई | वह आपके समाज का ही तो हिस्सा है | एक क्षण पहले तो वह यही था | मैंने उसके पूरे अस्तित्व को इस पात्र में बंद कर दिया है |"

सभी मातंग यह सुनकर चकित थे | उन्होंने एक दुसरे की ओर देखा | बाबा मातंग बोले - "हे हनुमान जी , हम आपकी इस लीला को समझ नहीं पाए | मैं सभी मातांगो में वरिष्ट हूँ | मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ की उर्वा नाम का न तो कोई मातंग है और न ही कभी हुआ है |"

"वह एक क्षण पहले उस स्थान पर खड़ा था |" हनुमान जी ने एक स्थान की ओर इशारा किया | लेकिन उस स्थान पर अब प्रेम नाम का मातंग बैठा था |

बाबा मातंग हाथ जोड़कर बोले - "हे प्रभु , क्षमा करें , किन्तु उस स्थान पर बैठे मातंग का नाम प्रेम है | उसका नाम उर्वा नहीं है | किसी भी मातंग का नाम उर्वा नहीं है |"

"क्या?" हनुमान जी ने अपने मुख पर चकित होने के भाव और भी गंभीर कर लिए और बोले - "उर्वा आपकी परंपरा को आगे बढाने वाला है | वह अगला बाबा मातंग बनने वाला है |"

बाबा मातंग ने उत्तर दिया - "अगला बाबा मातंग किसी को भी घोषित नहीं किया गया है , प्रभु | हमें आशा है कि आप युवा मातंगो में से किसी योग्य मातंग को पहचानकर उसे बाबा घोषित करेंगे | लेकिन जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है , वह बाबा कैसे बनेगा ? उर्वा नाम का हमारे बीच कोई नहीं है |"

हनुमान जी ने वहाँ बैठी एक औरत की ओर इशारा किया और बोले - "आप उर्वा की माता है , क्या आप भी उसे भूल गई ?"

औरत खड़ी हुई और हाथ जोड़कर बोली - "हे शक्तिशाली हनुमान जी , मेरा कोई पुत्र नहीं है | मेरी केवल एक पुत्री है और उसका नाम रत्ना है , उर्वा नहीं |"

हनुमान जी ने उर्मी का रुख किया और बोले - "तुम तो उर्वा के बहुत समीप हो , हे उर्मी | क्या तुम भी उसे भूल गई ? क्या तुम भूल गई कि वह चट्टानों पर कलाकृतियाँ बनाता है , उसने अपना चिन्ह इस विश्व के हर कण पर छोड़ा है | कुछ पल पहले तुम ही तो यह सब बता रही थी |"

उर्मी असमंजस में थी | हनुमान जी ने उर्वा के पूरे अस्तित्व को पात्र में बंद कर दिया था | उसके अस्तित्व का कोई भी चिन्ह विश्व में नहीं बचा था | उर्मी को कोई उत्तर नहीं सूझा तो बोली - "हे प्रभु , मैं किसी उर्वा को नहीं जानती | मैं उसके बारे में कैसे बता सकती हूँ जिसको मैं जानती ही नहीं ? लेकिन अगर आप कहते हैं कि उर्वा नाम का कोई मातंग है , तो मैं आपके शब्दों पर विश्वास करती हूँ | क्योंकि हम केवल मनुष्य हैं , हम भ्रम में पड सकते हैं | क्या आप हमें बता सकते हैं कि उस उर्वा नामक मातंग ने किस चट्टान पर कलाकृतियां बनाई हैं ताकि हम उन्हें देखकर उसके अस्तित्व का आभास पा सकें?"

हनुमान जी ने अपने मुख से अचंभित और अविश्वास में होने का कृत्रिम भाव हटा लिया और जोर से हंस पड़े | वे बोले - "हे उर्मी , तुम्हे उसकी बनाई कोई कलाकृति किसी भी चट्टान पर नहीं मिलेगी | मैंने उसके अस्तित्व का हर चिन्ह मिटा दिया है और इस पात्र में बंद कर दिया | यह द्रव उर्वा है | अगर मैं इस द्रव को व्यक्त होने दूँ , तो न केवल उर्वा पुनः प्रकट हो जाएगा , बल्कि उसने भूतकाल में जो कुछ भी किया है वह भी पुनः प्रकट हो जाएगा |"

उर्मी ने पूछा - "हम उर्वा नाम के किसी व्यक्ति के अस्तित्व के बारे में नहीं जानते लेकिन देवता तो उसके अस्तित्व के बारे में जानते होंगे | क्या हम अग्निदेव और जलदेव से पूछें?"

हनुमान जी ने उत्तर दिया - "उर्वा के अग्निदेव , जलदेव आदि के साथ आदान प्रदान भी इस पात्र में बंद हैं | अतः वे भी उसके बारे में नहीं जानते | केवल आकाश के देव इंद्रदेव और समय के देव कालदेव उसके बारे में जानते होंगे |"

उर्मी ने पूछा - "हे प्रभु , क्या इंद्रदेव और कालदेव अन्य देवताओं से श्रेष्ट हैं ?"

हनुमान जी ने उत्तर दिया - "हे उर्मी , जब यह आकाश का द्रव काल के धागों पर गिरता है तो यह विभिन्न वस्तुओं के रूप में व्यक्त होता है | उसके बाद ही जल , अग्नि आदि अस्तित्व में आते हैं | विष्णु भगवान् आत्मा की इच्छाएं पूर्ण करने का कार्य इंद्रदेव को देते हैं | अपने कार्य को पूरा करने के लिए इंद्र देव को जो कुछ चाहिए वह इस श्वेत द्रव में है जिसे आकाश कहते हैं | इंद्र देव को केवल यह द्रव मुक्तिसागर से लेकर काल के धागों पर गिराना होता है | इस तरह जीवन अस्तित्व में आता है | अतः इंद्र देव उन सभी देवो के राजा हैं जो इस द्रव के काल के धागों पर गिरने के बाद कार्य में लगते हैं |"

[सेतु टिप्पणी : मुख्यधारा के भक्त इसे सिनेमा प्रोजेक्टर के उदाहरण से समझ सकते हैं | जब प्रोजेक्टर से प्रकाश की किरण सिनेमा के परदे पर गिरती हैं तो फिल्म दिखाई देती है | अब कल्पना कीजिये कि प्रोजेक्टर से ऐसी किरण निकले जिससे कि वास्तविक वस्तुये बनने लगे -- जिन्हें हम देख सकें , महसूस कर सकें , छू सकें . ऐसे प्रोजेक्टर का नाम इंद्र होगा | इंद्रदेव आकाश के द्रव का पुंज काल के परदे पर प्रोजेक्ट करते हैं |]

"हे प्रभु , इस द्रव को व्यक्त होने दीजिये | हम यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि ये उर्वा कौन है |" उर्मी ने आग्रह किया |

हनुमान जी वह पात्र अपने दाए हाथ से बाए हाथ पर ले आये | उसके बाद उन्होंने दायाँ हाथ हवा में आगे फैलाया और कलाई से धीरे से घुमाया | 7 पीले धागे हवा में प्रकट हो गए | ये धागे काल के धागे थे जो साधारणतया अदृश्य होते हैं | उन्होंने सात धागों के एक भाग को मातांगो को पीले रंग में दिखाने की लीला की |

उर्मी ने पूछा - "हे प्रभु , क्या ये काल के धागे हैं ? लेकिन ये धागे गतिमान क्यों नहीं हैं ?"

हनुमान जी ने उर्मी को कोई उत्तर नहीं दिया | उन्होंने पात्र को इस तरह झुकाया कि द्रव उन धागों पर टपकने लगा | जैसे ही द्रव ने धागों को छुआ , द्रव धागों पर फ़ैल गया और धागे गतिमान हो गए |

अगले ही क्षण सब कुछ बदल गया | हनुमान जी के हाथ में जो पात्र था वह अदृश्य हो गया | उनका हाथ अब उर्वा की तरफ इशारा कर रहा था और उर्वा हाथ जोड़े खड़ा था, उसकी देह कांप रही थी |

"तुम भय से क्यों कांप रहे हो , उर्वा?" हनुमान जी ने पूछा |

"मैं आपको समर्पित हूँ , प्रभु - चाहे आप मेरा अस्तित्व समाप्त करना चाहें अथवा मुझे गायब करना चाहे - मैं पूर्णतः आपका हूँ |" उर्वा बुदबुदाया |

हनुमान जी मुस्कुराये और बोले - "मैं तुम्हे गायब क्यों करूँगा , उर्वा?"

उर्वा शांत खड़ा था | उर्मि बोल पड़ी - "हे प्रभु , जैसा कि मैं कह रही थी , इसने अपने अस्तित्व का चिन्ह विश्व के हर कण पर छोड़ा है | इसलिए इसके अस्तित्व को नहीं मिटाया जा सकता |"

हनुमान जी मुस्कुराये और बोले - "एक क्षण पहले मैंने इसके अस्तित्व को समाप्त किया था | मैंने इसके पूरे अस्तित्व को एक पात्र में बंद कर दिया था | उस समय आप में से कोई भी यह मानने को भी तैयार नहीं था कि उर्वा नाम का कोई व्यक्ति भी है | अब जबकि मैंने इसके अस्तित्व को पुनर्स्थापित कर दिया है , सब कुछ पहले जैसा हो गया है | अब तुम यह मानने को तैयार नहीं हो कि इसके अस्तित्व को मिटाया जा सकता है |"

यजमान चरिता बोली - "हे प्रभु , मुझे भी याद नहीं कि आपने उर्वा को कुछ क्षण पहले गायब किया था लेकिन मुझे एक धुंधला सा दृश्य जरूर याद है | मुझे कुछ धागों के ऊपर कोई द्रव टपकता याद आ रहा है ... वे धागे गतिमान हो गए जब वह द्रव उन पर गिरा | उसके पश्चात् मुझे कुछ स्मरण नहीं |"

"हे नादान , वे काल के धागे हैं | वे तब गतिमान होते हैं जब आकाश का द्रव उन पर गिरता है | उसी से जीवन अस्तित्व में आता है | आप सब लोग आकाश के, समय के धागों पर पड़ने वाले प्रक्षेपण के कारण ही अस्तित्व में हो | आपकी आत्मा काल के धागों पर बैठी है | आपकी आत्मा की कुछ इच्छाएं हैं | आकाश का द्रव काल के धागों पर गिरकर व्यक्त होता है और उन इच्छाओं को पूर्ण करता है | उस व्यक्त होने की प्रक्रिया में काल के धागे आगे की ओर चलते हैं | उनके साथ आपकी आत्मा भी चलती है और कुछ और इच्छाएं धारण कर लेती है | आकाश का द्रव पुनः काल के धागों पर व्यक्त होकर उन इच्छाओं को पूर्ण करता है | यह क्रम ऐसे ही तब तक चलता रहता है जब तक या तो काल के धागों से आत्मा गिर न जाए या भ्रम को पहचानकर मोक्ष को प्राप्त न हो जाए |"

सभी मातंग हनुमान जी के बोले शब्दों को समझने का प्रयास करने लगे | इसलिए कुछ पल सभा में सन्नाटा रहा | फिर हनुमान जी बोले - "मैं यहाँ से किसी भी व्यक्ति को कुछ इस तरह गायब कर सकता हूँ कि आप लोग यह भी भूल जायेंगे कि वो व्यक्ति कभी आपके साथ अस्तित्व में था | उसी तरह मैं यहाँ पर किसी भी व्यक्ति को कुछ इस तरह ला सकता हूँ कि आप सब लोग ये सोचोगे कि वो पहले से ही आपके साथ था | मैंने कुछ पल पहले उर्वा के साथ ऐसा ही किया था |"

इस समय एक अधेड़ उम्र का मातंग पूजा सभा से खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर बोला - “जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, प्रभु , तब आपको उस व्यक्ति का पूरा अस्तित्व मिटा देना चाहिए ताकि उस मृत व्यक्ति से सम्बंधित चीजे और यादें भी मिट जाएँ | आप मृत व्यक्ति की यादे और चीजे क्यों छोड़ देते हैं जो उसके प्रियजनो को दुःख देती हैं?”

हनुमान जी को यह देखकर अच्छा लगा कि एक साधारण मातंग ने चरण पूजा में प्रश्न किया | उन्होंने उत्तर दिया - “आपकी आत्मा को दुःख अनुभव इसलिए होते हैं क्योंकि आपकी आत्मा दुःख की इच्छा प्रकट करती है |”

“दुःख की इच्छा कोई नहीं करता प्रभु | सभी केवल सुख की इच्छा करते हैं |” उर्मी ने टिपण्णी की |

हनुमान जी मुस्कुराये और बोले - “सुख और दुःख एक दुसरे से जुड़े हुए हैं | अगर आप सुख की इच्छा करते हैं तो आप अप्रत्यक्ष रूप से दुःख की इच्छा भी करते हैं | इसलिए न सुख की इच्छा करो न दुःख की | तब आपको मुक्तिसागर में स्थान मिलेगा जहाँ न सुख है और न दुःख |”

यजमान चरिता ने पुछा - “हे प्रभु , मुझे पीले धागों पर श्वेत द्रव गिरने का धुंधला दृश्य क्यों याद है ? आपने उर्वा के साथ अभी जो किया, उसका दृश्य किसी अन्य मातंग को क्यों याद नहीं है?”

हनुमान जी ने उत्तर दिया - “हे चरिता , कल्पना करो कि मैंने उर्वा के पूरे अस्तित्व को एक पात्र में इकठ्ठा कर लिया| वह एक श्वेत द्रव जैसा दिखाई देगा | अगर मैं उस द्रव को पुनः मुक्त कर दू , कुछ भी नहीं बदलेगा | सब कुछ वैसा हो जाएगा जैसा अस्तित्व को पात्र में इकठ्ठा करने से पहले था | लेकिन कल्पना करो , अगर मैं आकाश द्रव की एक बूंद अपने पास रख लूँ और बाकी को व्यक्त होने के लिए मुक्त कर दूं? वह एक बूंद उर्वा के संसार को पूरी तरह बदल सकती है | उदाहरण के तौर पर , अगर वह बूँद त्वचा के रंग के लिए जिम्मेदार है , तो उर्वा की त्वचा का रंग चला जाएगा | उसकी त्वचा पारदर्शी हो जाएगी | वह एक बूँद न केवल उर्वा को बदल देगी , बल्कि आप सबको भी बदल देगी | क्योंकि आपके बीच एक असाधारण त्वचा का मानव रहने लगेगा | आप सबका विश्व को देखने का दृष्टिकोण बदल जाएगा | हे चरिता , मैंने उर्वा के अस्तित्व में से कोई बूंद तो नहीं निकाली है लेकिन थोडा सा परिवर्तन अवश्य किया है | वह परिवर्तन मैंने तुम्हारी इच्छा की पूर्ति में सहायक बनने के लिए किया है | इसीलिए तुम्हे वह धागों और द्रव का दृश्य याद रह गया | यह तुम्हारी इच्छापूर्ति में सहायक होगा |”

उर्मी ने बसंत की ओर देखा जो चरण पूजा के पहले चरण का यजमान था | उसकी अपने रत्न पाने की इच्छा अभी पूरी नहीं हुई थी | उर्मी ने उसकी ओर इस जिज्ञासा में देखा कि क्या उसकी इच्छापूर्ति के लिए भी हनुमान जी ने कोई परिवर्तन किया है ? लेकिन उसके मिजाज से ऐसा कुछ नजर नहीं आ रहा था |

हनुमान जी आगे बोले - “और्वा नाम के एक ऋषि थे | उन्होंने आकाश के द्रव पर इतने प्रयोग करने शुरू कर दिए थे कि स्वयं इंद्रदेव उनकी खोजों से अपने अस्तित्व को खतरा मानने लगे थे | हालांकि और्वा ने अपनी खोजों का प्रयोग बुरे कार्यों के लिए कभी नहीं किया, किन्तु वे किसी का भी भाग्य बदलने की शक्ति धारण कर चुके थे |

“और्व ऋषि राजा सागर के गुरु थे और राजा सागर भगवान् राम के पूर्वज थे | राजा सागर का जीवन और्व ऋषि के कारण ही था | जब सागर अपनी माता के गर्भ में था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई | उसके पिता अपना राज्य गवां चुके थे और जंगलों में रह रहे थे | शत्रु बहुत थे | उसके पिता की मृत्यु के बाद शत्रुओं ने उसकी माता को मारने के लिए ढूँढना शुरू कर दिया था | तब और्व ऋषि ने उसकी माता की जान बचाई थी | जब सागर पैदा हुआ तब ऋषि और्व ने उसको शिक्षित दीक्षित किया | बड़ा होने पर सागर ने अपने पिता के शत्रुओं को पराजित कर अपना खोया हुआ राज्य हासिल किया |

“राजा बनने के पश्चात् भी राजा सागर प्राय: और्व ऋषि के आश्रम में जाया करते थे | एक बार उन्होंने वहां अपनी पत्नी सुमति के साथ जाने का विचार बनाया | जब भी वे जाते थे तो वे और्व ऋषि के पुत्र रिशिक के लिए मोदक अवश्य ले जाते थे | उन्हें पता था कि रिशिक को मोदक बहुत पसंद हैं इसलिए वे विशेष रूप से राज रसोई से मोदक बनवाते थे |

“जिस दिन वे आश्रम को कूच करने वाले थे उससे 2 दिन पहले सुमति ने राज खानसामे को मोदक तैयार करने का आदेश दे दिया था |

“जिस सुबह सागर और सुमति आश्रम की तरफ अपनी यात्रा शुरू करने की तैयारी कर रहे थे , तब आश्रम में ध्यान मग्न ऋषि और्व को भविष्यदर्शन हुआ | उन्हें दर्शन हुआ कि सागर और सुमति रास्ते में एक भूस्खलन की वजह से मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं | ऋषि और्व के पास उन्हें बचाने का एक ही विकल्प था : कि वे तुरंत उन्हें सन्देश भेजे कि वे उस रास्ते से न आयें जहाँ से भूस्खलन होने वाला था |

“ऋषियों को भविष्यदर्शन में जो दिखे उसे उजागर करने की आज्ञा नहीं होती | अगर वे उजागर करते हैं तो उनकी भविष्य दर्शन की शक्ति चली जाती है | इसलिए यह विकल्प उचित नहीं था |

“ऋषि और्व ने अपनी उसी खोज को प्रयोग में लाने की सूझी जिससे इंद्र देव उनसे नाराज थे : किसी भी अस्तित्व को पूर्णतः मिटाने की खोज | ऋषि और्व स्वयं अपने पुत्र पर इस खोज का प्रयोग कर रहे थे | वे अपने पुत्र रिशिक के अस्तित्व को एक पात्र में बंद करने में कुशल हो गए थे |

“जब राजा सागर और रानी सुमति अपने महल से निकलने की तैयारी कर रहे थे तब ऋषि और्व ने अपने आश्रम में अपने पुत्र रिशिक के अस्तित्व को मिटा दिया : अर्थात रिशिक से सम्बंधित सभी स्मृतियाँ और चिह्न एक पात्र में बंद हो गए |

“जब राजा और रानी महल से निकले , उनका राज खानसामा भागा भागा आया | वह चिल्ला रहा था - “हे राजन , हे महारानी, आप ये मोदक अपने साथ ले जाना भूल गए |”

“रानी सुमति बोली - “मोदक? किसलिए ? हम ऋषि और्व के आश्रम में मोदक क्यों ले जाएँ ?”

“मुझे नहीं पता , महारानी |” खानसामे ने उत्तर दिया - “आपने मुझे आपकी इस यात्रा के लिए मोदक बनाने का आदेश दिया था |”

““नहीं, तुमसे कोई भूल हुई है | मैंने मोदक बनाने का आदेश नहीं दिया |” रानी ने उत्तर दिया | ऋषि और्व के पुत्र और मोदकों के बारे में सब कुछ उनकी स्मृति से उड़ गया था क्योंकि ऋषि और्व ने अपने पुत्र के अस्तित्व को मिटा दिया था |

“राजा और रानी बिना मोदक लिए ही रवाना हो गए | जब वे ठीक उस स्थान के पास पहुंचे जहाँ भूस्खलन होना निश्चित था , और्व ने अपने आश्रम में अपने पुत्र के अस्तित्व को पुनर्स्थापित कर दिया | रिशिक के बारे में सभी स्मृतियाँ और चीजे विश्व में पुनः व्यक्त हो गई | राजा और रानी के मन में भी रिशिक की स्मृति लौट आई | उन्हें आभास हुआ कि वे महल से मोदक लाना भूल गए हैं | उन्होंने अपना कारवां रुकवाया |

“जब वे सोच रहे थे कि महल से मोदक कैसे मंगवाए जाएँ - वे स्वयं जाएँ या सैनिक को भेजें - तभी उनसे कुछ मीटर की दूरी पर भूस्खलन शुरू हो गया | उन्होंने खैर मनाई कि उन्होंने अपना कारवां ठीक समय पर रोक लिया | उन्हें आभास नहीं था कि उनकी जान ऋषि और्व की खोज ने बचाई थी |

“जब महल से मोदक आ गए तो उन्होंने दूसरा रास्ता पकड़ा और ऋषि और्व के आश्रम पहुंचे |

"उन्होने आश्रम में शांतिपूर्ण समय बिताया और ऋषि और्व के साथ अच्छा वार्तालाप किया | ऋषि और्व ने ध्यान दिया कि रानी सुमति का मन पूर्णतः शांत नहीं था | उन्होंने अपने ज्ञान के शब्दों से रानी को सम्मोहित किया जिससे कि उनके मन की भावनाएं बाहर आई | उन्होंने बताया - "गुरुदेव, छोटी रानी ने आपकी कृपा से असमंजस नामक बच्चे को जन्म दिया है | राजवंश असमंजस के जरिये आगे बढ़ जाएगा | राजन खुश हैं , मैं भी खुश हूँ | मैं असमंजस को अपना ही बच्चा मानती हूँ | लेकिन कही अन्दर से मुझे औरत के रूप में अपूर्णता का आभास होता है | मातृत्व का अनुभव करने की इच्छा मर नहीं रही है जिससे कि मेरा मन अशांत रहता है | आपने बताया कि मेरा गर्भ बच्चा सँभालने में सक्षम नहीं है | मुझे पता है कि मैं कभी माँ नहीं बन पाउंगी किन्तु मेरा मन यह सत्य स्वीकार नहीं कर पाया है |"

"तुम्हे किसने बताया कि तुम माँ नहीं बन सकती ? मैंने तो तुम्हे केवल इतना बताया कि तुम्हारी देह बच्चा नहीं धारण कर सकती | इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम बच्चे को जन्म नहीं दे सकती |" ऋषि और्व ने बताया - "तुम्हारे पास किसी अन्य औरत की भांति ही 60000 बच्चे पैदा करने की शक्ति है |"

"साठ हज़ार?" रानी ने आश्चर्य से कहा |

"यह तो मानव क्षमता के अनुसार असंभव मालुम पड़ता है गुरुदेव|" राजा ने कहा |

"जीवन को अस्तित्व में आने के लिए केवल दो चीजों की आवश्यकता होती है - काल के धागे और आकाश का द्रव |" ऋषि और्व ने बताया - "एक जीवन को व्यक्त होने के लिए 7 समय के धागों की आवश्यकता होती है | हे सुमति , तुम समय के 7 धागों पर विराजमान हो | हे सागर , तुम भी समय के 7 धागों पर विराजमान हो | लेकिन एक अंतर है : पुरुष के समय के धागे तने की तरह सीधे होते हैं जबकि महिला के समय के धागे वृक्ष की शाखा की तरह होते हैं | जैसे शाखा से टहनियां प्रस्फुटित होती हैं, समय के छोटे रेशे औरत के समय के धागों से निकलते हैं | एक महिला 420000 समय के रेशे निकाल सकती है | एक जीवन के लिए 7 रेशों की आवश्यकता होती है , अतः वह कुल 60,000 बच्चों की माँ बन सकती है |"

"राजा सागर ने पूछा - "गुरुदेव , तो फिर नया जीवन व्यक्त करने में पुरुष की क्या भूमिका है?"

"ऋषि और्व ने उत्तर दिया - "समय के रेशे तब तक जीवन को अपने ऊपर धारण नहीं कर सकते जब तक कि वे गतिमान न हो जाएँ | समय के रेशे तभी गतिमान होते हैं जब आकाश द्रव उन पर पड़ना शुरू हो जाता है | जब आकाश का द्रव काल के धागों पर पड़ना बंद हो जाता है , जीवन का अस्तित्व समाप्त हो जाता है | अपने अस्तित्व की कल्पना करो , हे सागर | तुम्हारा अस्तित्व इसलिए है क्योंकि तुम समय के 7 धागों पर विराजमान हो जिन पर आकाश का द्रव लगातार गिर रहा है | तुम्हारे काल के धागों पर आकाश का द्रव , आकाश के देवता इंद्र गिरा रहे हैं |"

[सेतु टिपण्णी : इस घोर अज्ञानता के युग में एक मिथ्या प्रसिद्ध है कि इंद्र वर्षा के देव हैं | अब आप कल्पना कर सकते हैं कि यह मिथ्या कैसे प्रचलित हुई | इंद्र आकाश के द्रव की वर्षा समय के धागों पर करते हैं | वे उस साधारण पानी की वर्षा नहीं करते जो वर्षा के मौसम में आप देखते हैं | वे संसार चलाने में योगदान देने वाले सभी देवताओं के राजा है |]

"राजा सागर ने पूछा - "गुरुदेव , अगर आकाश का द्रव इंद्र देव गिरा रहे हैं , तो एक पुरुष की नया जीवन व्यक्त करने में क्या भूमिका है ? महिला सीधे इंद्र देव से ही प्रार्थना कर सकती है कि - "हे इंद्रा , मैंने समय के 7 रेशों को अलग किया है , कृपा आकाश का द्रव उन रेशों पर गिराइए ताकि उन पर नया जीवन व्यक्त हो सके |""""

""आकाश के देव इंद्रदेव पुरुष के माध्यम से प्रकट होते हैं और समय के देव कालदेव महिला के माध्यम से व्यक्त होते हैं|" ऋषि और्व ने वर्णन किया - "मान लो कि तुम्हे इन खेतों में पानी लाना है | यहाँ से 8 मील की दूरी पर नदी बह रही है | यहाँ तक पानी लाने के लिए तुम वहां से यहाँ तक नहर बनाओगे या वहां से जहाँ से नदी की शुरुआत होती है? आकाश का द्रव मुक्तिसागर से आता है | उस द्रव की एक धारा तुम तक पहले से ही पहुँच रही है | नया जीवन व्यक्त करने के लिए इंद्रदेव को उसी धारा से नई धारा निकालने की आवश्यकता है, न कि मुक्तिसागर से नई धारा लाने की |"

""मैं इंद्र देव से कैसे प्रार्थना करू कि वे मेरी धारा से नई धारा निकालकर नया जीवन व्यक्त करें?" राजा सागर ने पूछा |

"ऋषि और्व ने उत्तर दिया - "हे सागर , तुम्हारे आकाश की धारा तुम्हारे समय के धागों पर गिरकर उन सभी चीजों का निर्माण करती है जो तुम अपने आस पास देखते हो | अगर तुम चाहते हो कि इंद्र तुम्हारे आकाश की धारा से नई धारा निकालकर नया जीवन व्यक्त करें , तो तुम्हे अपने चारों और की सभी चीजों को मिटाना होगा , केवल एक पल के लिए | उस पल में इंद्र देव तुम्हारी आकाश धारा से एक धारा निकालकर उसे तुम जहाँ चाहो वही दिशा दे देंगे |"

"जहाँ मैं चाहूँ?" राजा सागर ने पूछा |

"ऋषि और्व ने उत्तर दिया - "हाँ , अगर तुम सुमति के साथ संतान चाहते हो तो जिस समय इंद्र देव तुम्हारी आकाश धारा को बांटे, उस समय तुम्हारी आत्मा का सुमति की आत्मा के समीप होना आवश्यक है |"

"रानी सुमति ने पूछा - "लेकिन गुरुदेव , आपने तो कहा था कि मेरी देह बच्चा धारण नहीं कर सकती| तो फिर मैं माँ कैसे बन सकती हूँ ?"

"ऋषि और्व ने उत्तर दिया - "सैद्धांतिक रूप से एक छोटी लड़की के अन्दर भी 4,20,000 समय के रेशे होते हैं | लेकिन आत्मा हमेशा देह के प्रति रक्षात्मक होती है | इसीलिए, जब तक कोई देह बच्चा धारण करके के योग्य न हो तब तक आत्मा समय के रेशो का प्रस्फुटन नहीं होने देती | अगर एक देह 1 बच्चा धारण करने योग्य हो तब आत्मा केवल 7 रेशो को प्रस्फुटित होने देती है | तुम्हारी देह में एक कमी होने के कारण तुम्हारी आत्मा समय के एक भी रेशे को प्रस्फुटित नहीं होने दे रही है | अगर तुम कोई अन्य देह धारण कर लो, तो तुम माँ बन सकती हो |"

""अन्य देह?" रानी सुमति ने आश्चर्य से पूछा |

"ऋषि और्व ने उत्तर दिया - "मान लो कि एक औरत की देह है जो जीवित है लेकिन उसमे कोई आत्मा नहीं है (कोमा जैसी स्थिति) | अगर तुम्हारी आत्मा को यह विश्वास दिला दिया जाए कि वह देह तुम्हारी ही है , तो तुम उस देह में बच्चा धारण कर सकती हो |"

""लेकिन जब बच्चा उस देह से पैदा होगा तो उसमे उस देह के गुण होंगे | वह देह उसकी माता होगी , मैं नहीं | उस देह से पैदा बच्चे से मुझे मातृत्व का सम्बन्ध महसूस नहीं होगा |" रानी सुमति ने कहा |

""सुमति , अगर तुन्हारे समय के रेशे उस बच्चे को जीवन देने के लिए प्रयोग किये जायेंगे , तो उसमे तुम्हारे गुण होंगे | और तुम्हारी आत्मा उस बच्चे के साथ मातृत्व का सम्बन्ध अनुभव करेगी | जिस औरत की देह प्रयोग की जायेगी , उसको उस बच्चे से कोई लगाव नहीं होगा |" ऋषि और्व ने कहा | अपने सैद्धांतिक ज्ञान को परखने की सम्भावना दिखाई देने से ऋषि और्व की आँखें चमक रही थी | उन्होंने पूछा - "क्या तुम्हारे राज्य में कोई ऐसी औरत है जो तुम्हारे बच्चे के जन्म के लिए अपनी देह का प्रयोग करने के लिए राजी हो? मुझे उसकी आत्मा उसकी देह से निकालनी पड़ेगी और उसे 9 महीने तक आत्माहीन अवस्था में रखना पड़ेगा |"

"रानी सुमति ने उत्तर दिया - "हमारे राज्य की कोई भी औरत ऐसा करने के लिए राजी हो जाएगी | जैसा कि आप जानते हैं , मैं रानी होने के साथ साथ महिला मामलों की मंत्री भी हूँ | राज्य की सभी औरतें मुझसे बहुत प्यार करती हैं | वे मेरे लिए अपनी जान भी न्योछावर कर सकती हैं |"

""उनके जीवन को कोई खतरा नहीं होगा |" ऋषि और्व ने बताया | रानी सुमति केवल एक पुत्र चाहती थी लेकिन ऋषि और्व अपने सैद्धांतिक ज्ञान को परखना चाहते थे | उन्होंने राजा और रानी को इस प्रयोग के लिए मना लिया | 60,000 से कुछ ज्यादा औरतों को आत्माहीन बनाया गया जिनमे से

केवल 60,000 औरतें रानी सुमति और राजा सागर के पुत्रों से गर्भवती हुई | 9 महीने बाद सुमति 60,000 बच्चों की माँ बन गई |" हनुमान जी ने मातंगों को बताया |

[सेतु टिपण्णी : अगर आप किसी ऐसे दम्पति को जानते हैं जो निसंतान हैं , आप या तो इस अध्याय का लिंक उनके साथ शेयर कर सकते हैं या इसका प्रिंट आउट निकालकर उनके साथ शेयर कर सकते हैं | इससे उन्हें इच्छापूर्ति में सहायता मिल सकती है | कृपा ध्यान दें , इस वेबसाइट पर प्रकाशित सामग्री का प्रिंट आउट लेने की अनुमति केवल व्यक्तिगत प्रयोग के लिए है | प्रिंट आउट बटन बॉटम मेनू में उपलब्ध है |]

दसवे अध्याय का supplementry : "भगवान् कृष्ण द्वारा देवी दुर्गा के 9 रूपों का दुर्लभ वर्णन" पढने के लिए यहाँ क्लिक करें

दसवे अध्याय के रोजमर्रा के जीवन में व्यवहारिक उपयोग :

1. **अपना सौभाग्य अपने आप कैसे बनाएं ? :** दसवे अध्याय में राजा सागर भूस्खलन में मृत्यु को प्राप्त होने वाले थे | उनके गुरु और्व वहां से मीलों दूर थे तो भी उन्होंने राजा को मात्र उनकी याददाश्त से खिलवाड़ करके बचा लिया | राजा सागर और उनकी पत्नी इसलिए बच गए क्योंकि उनके मन में ऋषि और्व के पुत्र की स्मृतियाँ थी | अगर आप भी अपना सौभाग्य बनाना चाहते हैं तो आपके मन में सिद्धों अथवा भगवानों को प्रिये किसी वस्तु की स्मृति होनी चाहिए | उदाहरण के तौर पर , अगर आप चाहते हैं कि भगवान् राम आपकी रक्षा करें तो आपके मन में उनके प्रिये श्री हनुमान जी की स्मृतियाँ होनी चाहिए | यहाँ पर आप हनुमान जी की लीलाएं पढ़कर आप अपने मन में उनकी स्मृतियाँ बना रहे हैं और अपना सौभाग्य सुदृढ़ कर रहे हैं |
2. **अच्छे भविष्य के निर्माण का सूत्र :** इस अध्याय में यह बताया गया है कि हमारा अस्तित्व काल के तीन आयामों में है : भूत , भविष्य और वर्तमान | अर्थात भूत , भविष्य व वर्तमान आपस में जुड़े हुए हैं | अगर आप अपने भविष्य को बदलना चाहते हैं तो आपको अपना वर्तमान तथा भूतकाल दोनों बदलने पड़ेंगे | वर्तमान को बदलना तो आपके हाथ में है लेकिन भूतकाल कैसे बदले ? भूतकाल बदलने का सूत्र है - "भूलो और माफ़ करो" | उनको माफ़ करो जिन्होंने आपको भूतकाल में हानि पहुंचाई है और भूतकाल के पीड़ादायक अनुभवों को भूल जाओ | भूतकाल का वजन अपनी पीठ पर लादकर भविष्य की ओर मत बढ़ो अगर आपको अपना भविष्य बेहतर बनाना है तो |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता

था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

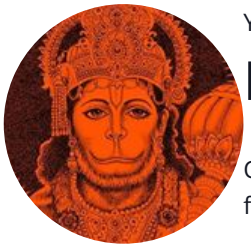

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »